

# डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 8, प्रकाशितवाक्य 21-22 में मंदिर

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह रहस्योद्घाटन 21-22 में मंदिर पर सत्र 8 है।

हमने नए नियम के साक्ष्य या ग्रंथों को देखा जो दर्शाते हैं कि परमेश्वर का मंदिर निवास, परमेश्वर का निवास स्थान, पुराने नियम में निवास स्थान और मंदिर के लिए उसके इरादे, और भविष्यवाणियों की अपेक्षाएँ अब यीशु मसीह में पहले से ही साकार और पूरी हो चुकी हैं, और फिर विस्तार से, उसके अनुयायियों में।

लेकिन इनमें से ज़्यादातर विषयों की तरह इसमें भी एक आयाम है जो अभी तक नहीं है। एक आयाम है जो पहले से ही है, लेकिन अभी तक नहीं है। मंदिर का अभी तक नहीं आयाम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में श्लोक 1 से शुरू होकर 22 और श्लोक 5 तक पाया जाता है। अब, मैं आपको यह पूरा खंड नहीं पढ़कर सुनाऊंगा।

हम मंदिर की छवि, मंदिर के विषय से इसके संबंध और उस विषय की पूर्ति के संदर्भ में प्रकाशितवाक्य 21 और 22 को देखना शुरू करते समय इसके कुछ भागों का उल्लेख करेंगे। लेकिन प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, हम एक नई सृष्टि के बारे में पढ़ते हैं। यूहन्ना छुटकारे के इतिहास के चरमोत्कर्ष को एक नई सृष्टि और उसके केंद्र के रूप में एक नए यरूशलेम में देखता है।

लेकिन इस खंड में संभवतः सबसे चौंकाने वाला अंश है, विशेष रूप से पुराने नियम के अंशों के प्रकाश में, जिनका उल्लेख प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में किया गया है, और अन्य यहूदी दर्शनों और भविष्य में नई सृष्टि और भविष्य की पुनर्स्थापना और मुक्ति और पूर्णता की अपेक्षाओं के प्रकाश में, जो चौंकाने वाला है वह है जो यूहन्ना अध्याय 21 के अंत में कहता है। अतः 21 में, वास्तव में, यूहन्ना यहजेकेल 40 से 47 पर निर्भर करता है। अध्याय 21 में, यूहन्ना, यहजेकेल की तरह, एक भ्रमण करता है, लेकिन यह मंदिर का नहीं है।

यह नए यरूशलेम शहर का है। जॉन नए यरूशलेम का दौरा करता है, और वह इसके द्वार और इसकी दीवारें देखता है। इस यात्रा में उसका मार्गदर्शन करने वाला स्वर्गदूत नए यरूशलेम के विभिन्न भागों को मापता है, ठीक वैसे ही जैसे आप यहजेकेल में पाते हैं।

जब ऐसा लगता है कि यूहन्ना अब शहर के अंदर है, शायद उसके केंद्र में, तो वह पद 22 में कुछ दिलचस्प कहता है। यूहन्ना कहता है कि मैंने मंदिर नहीं देखा। अब, यह अजीब क्यों है, फिर से, नंबर एक, पुराने नियम का मार्ग जिसका यूहन्ना बहुत अधिक उपयोग कर रहा है, यहजेकेल 40 से 48, मंदिर इसके केंद्र में है।

यहेजकेल जो देखता है, स्वर्गदूत उसे किसकी सैर पर ले जाता है, और वह जो नापता है, वह मंदिर है। लेकिन अब यूहन्ना, यहेजकेल पर भरोसा करते हुए, श्लोक 22 में यहेजकेल के विपरीत, कहता है, मैंने मंदिर नहीं देखा। और फिर, शायद यूहन्ना नए यरूशलेम के केंद्र में है और जहाँ आप उम्मीद करेंगे, वही जगह जहाँ आप मंदिर देखने की उम्मीद करेंगे, यूहन्ना कहता है, मैंने एक भी नहीं देखा।

जॉन अपने शहर को आदर्श ग्रीको-रोमन शहरों या उस समय के हेलेनिस्टिक शहरों के आधार पर भी बना सकता है, जिसके केंद्र में कहीं, शायद प्लाजा या अगोरा में, देवताओं या सम्राट को समर्पित एक मंदिर या मंदिर होता। और अब फिर से, जहाँ शायद जॉन इस शहर के केंद्र में है, जहाँ वह, आप एक मंदिर खोजने की उम्मीद कर सकते हैं, चाहे ग्रीको-रोमन शहरों में या पुराने नियम में बहाल यरूशलेम की अपेक्षाओं में, जॉन कहता है, मैंने एक मंदिर नहीं देखा। अन्य यहूदी सर्वनाश, उदाहरण के लिए, 1 हनोक में, अध्याय 80 से 90 और उसके बाद, 1 हनोक एक बहाल मंदिर या एक बहाल यरूशलेम का वर्णन करता है, और इसमें एक मंदिर है।

इसलिए भविष्य में बहाल किए गए यरूशलेम की यहूदी उम्मीदों में हमेशा एक नवीनीकृत मंदिर या एक पुनर्निर्मित मंदिर शामिल था, जैसा कि हम यहेजकेल 40 से 48 में पाते हैं। लेकिन जॉन कहते हैं, जहाँ आप मंदिर खोजने की उम्मीद कर सकते हैं, जॉन कहते हैं, मैंने एक मंदिर नहीं देखा। और इसका कारण यह है कि जॉन आगे कहते हैं, मैंने शहर में एक मंदिर नहीं देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना इसका मंदिर हैं।

यह लगभग उसी बात के अनुरूप है जो हमने यूहन्ना के सुसमाचार में देखा था, जहाँ यीशु स्वयं मंदिर थे। यीशु का अपना शरीर ही वह मंदिर था जिसे वह खड़ा करेंगे। यीशु मसीह के व्यक्तित्व में, परमेश्वर का निवास और मंदिर की महिमा अब लोगों के साथ निवास करती थी।

अब, इसी तरह, यूहन्ना कहता है, नए यरूशलेम में कोई मंदिर नहीं है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर और मेमना ही मंदिर हैं। दूसरे शब्दों में, मंदिर हमेशा से जिस ओर इशारा कर रहा था, वह अब एक वास्तविकता है, क्योंकि परमेश्वर और मेमना अपने लोगों के साथ एक नई सृष्टि पर निवास कर रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने उत्पत्ति 1 और 2 में अदन के बगीचे में किया था। इसलिए, अब और मंदिर न होने का कारण यह है कि मंदिर जिस बात का अनुमान लगाने और संकेत करने की कोशिश कर रहा था, वह अब एक वास्तविकता है।

परमेश्वर और मेमना पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ सीधे धरती पर एक वास्तविक स्थान पर निवास कर रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने अदन के बगीचे में किया था। इसलिए, इस कारण से, अब मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं है। और यूहन्ना कहता है, जब उसने उसी स्थान को देखा जिसकी आप यहूदी अपेक्षाओं के प्रकाश में, जैसे कि यहेजकेल 40-48 में, और यहाँ तक कि एक आदर्श शहर के ग्रीको-रोमन और हेलेनिस्टिक चित्रणों के प्रकाश में भी उम्मीद कर सकते हैं, तो यूहन्ना को कोई मंदिर नहीं दिखता क्योंकि यह अब अपनी पूर्णता पर पहुँच चुका है।

यह जिस ओर इशारा कर रहा था वह अब एक वास्तविकता है। लेकिन मैं आपको सुझाव दूंगा कि यह मामला यहीं खत्म नहीं होता। यह दिलचस्प है कि जॉन नए यरूशलेम को मंदिर के बराबर मानता है।

हम जो खोजने जा रहे हैं, हालाँकि जॉन कहता है, मैंने कोई मंदिर नहीं देखा, यानी, कोई भौतिक अलग मंदिर नहीं है, जॉन जो करता है वह यह है कि वह यहजकेल 40-48 और पुराने नियम में कहीं और से मंदिर की छवि लेता है, और वह इसे लागू करता है, वह इसे पूरे नए यरूशलेम और नई सृष्टि पर आरोपित करता है। एक बार फिर, पूरी सृष्टि, पूरा नया यरूशलेम, अब एक मंदिर है जहाँ परमेश्वर रहता है और अपने लोगों के साथ रहता है। इसलिए, जॉन एक अलग मंदिर नहीं देखता क्योंकि परमेश्वर और मेमना ही मंदिर हैं, लेकिन साथ ही, पूरा नया यरूशलेम अब एक मंदिर बन गया है।

मैं प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में केवल छह या सात बातों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो स्पष्ट रूप से इसे प्रदर्शित करती हैं। सबसे पहले, अध्याय 21 और पद 3 में, एक पाठ जिसे हम पहले ही देख चुके हैं और आगे भी देखते रहेंगे, अध्याय 21 और पद 3 में, यूहन्ना ने यहजकेल अध्याय 37 और लैव्यव्यवस्था अध्याय 26 से नई वाचा के सूत्र को उद्धृत किया है, संभवतः वही दो अंश जिन्हें पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 6.16 में उद्धृत किया था ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि कलीसिया एक मंदिर थी। अब यूहन्ना अध्याय 21 और पद 3 में उन लोगों का उल्लेख करता है, जहाँ यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 21.3 में कहता है, मैंने सिंहासन से एक ऊँची आवाज़ सुनी, जो कह रही थी, देखो, परमेश्वर का निवास स्थान अब लोगों के बीच है, और वह उनके साथ रहेगा।

वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। हमने यहजकेल 37 और लैव्यव्यवस्था 26 में भी देखा कि इस वाचा सूत्र ने मंदिर की स्थापना के वर्णन का पूर्वानुमान लगाया या प्रस्तावना दी। यहजकेल 37 में, हम इस वाचा सूत्र को पाते हैं: परमेश्वर का निवास उसके लोगों के साथ होगा, उसके बाद 40 से 48 तक, जो उस मंदिर का वर्णन करते हैं, जो उस निवास का वर्णन करते हैं।

अब, यूहन्ना 21:3 में कुछ ऐसा ही करता है; यूहन्ना हमें वाचा का सूत्र देता है: परमेश्वर का निवास अब उसके लोगों के साथ है; वह उनके साथ रहेगा, वे उसके लोग होंगे, वह उनका परमेश्वर होगा। और फिर हम जो पाते हैं वह मंदिर का वर्णन नहीं है, बल्कि हमें नए यरूशलेम का वर्णन मिलता है। तो, नए यरूशलेम की दुल्हन मंदिर है, परमेश्वर का निवास स्थान।

इसलिए परमेश्वर फिर से किसी अलग भौतिक संरचना या मंदिर भवन में नहीं रहता। अब, परमेश्वर की उपस्थिति संपूर्ण सृष्टि और संपूर्ण नए यरूशलेम के साथ सह-व्यापक है। वास्तव में, बहुत अधिक विवरण में जाए बिना, मैं तर्क दूंगा कि यहाँ नया यरूशलेम, जैसा कि हम पौलुस के पत्रों में और 1 पतरस 2 के अंश में भी देखते हैं, जिसे हमने देखा, यहाँ नया यरूशलेम संभवतः मुख्य रूप से लोगों को संदर्भित करता है। नए यरूशलेम की तुलना दुल्हन से की जाती है, जो पहले स्पष्ट रूप से दुल्हन स्वयं लोग थे।

इसलिए, मुझे लगता है कि यूहन्ना वही कर रहा है जो पौलुस ने किया था, भवन और मंदिर की कल्पना को लेकर उसे लोगों पर लागू करना। अब यूहन्ना यहाँ भी कुछ ऐसा ही करता है, नए यरूशलेम की कल्पना और यहाँ तक कि मंदिर की कल्पना को लेकर उसे लोगों पर लागू करता है। इसलिए, नया यरूशलेम मुख्य रूप से लोगों को ही संदर्भित करता है।

और इसलिए, मंदिर मुख्य रूप से उन लोगों को भी संदर्भित करता है जो अब नई सृष्टि, नई पृथ्वी पर रहते हैं और अस्तित्व में हैं। लेकिन 21:3, प्रकाशितवाक्य 21:3 में लैव्यव्यवस्था 26, यहजेकेल 20.37 से वाचा सूत्र दर्शाता है कि नए यरूशलेम के लोग, अपने लोगों के साथ परमेश्वर का नया वाचा निवास, एक अलग मंदिर में नहीं। यूहन्ना ने कहा कि एक नहीं है, 21:22, लेकिन इसके बजाय, पूरे लोग, पूरा नया यरूशलेम, अब परमेश्वर का निवास स्थान, मंदिर है।

दूसरी बात जो हम पहले ही बता चुके हैं, वह यह है कि लगभग विरोधाभासी रूप से, और बहुत दिलचस्प रूप से, यहजेकेल 40-48 प्राथमिक मॉडल है, प्राथमिक पुराने नियम का मॉडल जिसे यूहन्ना नए यरूशलेम के वर्णन और अवधारणा के लिए अपनाता है। लेकिन यहजेकेल 40-48 के केंद्र में एक नए मंदिर, एक बहाल अलग मंदिर और नए यरूशलेम से एक अलग मंदिर का वर्णन और माप है। लेकिन फिर से विरोधाभासी रूप से, यूहन्ना एक अलग मंदिर नहीं देखता है, अध्याय 21.22, लेकिन अब यहजेकेल 40-48 को नए यरूशलेम, नई यरूशलेम दुल्हन पर ही लागू करता है।

उदाहरण के लिए, यहजेकेल 40-48 में यूहन्ना मंदिर के बजाय शहर को मापता है। मंदिर को मापा जाता है। प्रकाशितवाक्य 21 में मंदिर के सभी हिस्सों को मापा गया है।

यह शहर है जिसे मापा जाता है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 22, श्लोक 1 और 2 में, जीवन की नदी सिंहासन से बहती है। यहजेकेल 40-48 में, यह मंदिर से बहती है।

तो फिर, यूहन्ना ने यहजेकेल से मंदिर की छवि ली और इसे पूरे शहर पर लागू किया। कुछ अन्य रोचक उदाहरण यहजेकेल 40-48 में हैं, खासकर अध्याय 43 और पद 16 में। यहजेकेल 40-43 और पद 16 में, पुनर्स्थापित मंदिर और उसके भागों का वर्णन करते हुए।

आइए देखें, 43 और श्लोक 16 में हम इसे पढ़ते हैं। सबसे ऊपर, लेखक वेदी का वर्णन कर रहा है। सबसे ऊपर, वेदी का चूल्हा चार हाथ ऊँचा है, और चार सींग धरती से ऊपर की ओर निकले हुए हैं।

वेदी का चूल्हा चौकोर है, या यह चार चौकोर है। दिलचस्प बात यह है कि सेप्टुआजेंट, ग्रीक अनुवाद में, यह वही शब्द है जो आपको नए यरूशलेम का वर्णन करने के लिए प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और पद 16 में मिलता है। इसलिए, पॉल 21-16 में कहता है, शहर को एक वर्ग या चार चौकोर की तरह बनाया गया था।

फिर से, ग्रीक शब्द यहजेकेल अध्याय 43 और पद 16 के ग्रीक अनुवाद में वेदी का वर्णन करते हुए वही शब्द है। इसलिए एक बार फिर, लेखक, यूहन्ना, यहजेकेल 40-48 से भाषा लेता है और इसे अब एक अलग मंदिर पर लागू नहीं करता है, बल्कि इसे पूरे नए यरूशलेम पर लागू करता

है। और फिर, ऐसा इसलिए है क्योंकि अब, चूंकि मेमना और परमेश्वर मंदिर हैं, इसलिए अब अलग मंदिर की आवश्यकता नहीं है।

इसलिए, मंदिर की छवि ईश्वर के निवास को दर्शाती है, और अपने लोगों के साथ ईश्वर की उपस्थिति की आशा करना अब पूरे शहर पर लागू होता है। यह उत्पत्ति 1 और 2 में ईडन के बगीचे और सृष्टि के बीच संबंधों को खोजने के समान या शायद समान है, मंदिर की छवि और निवास स्थान की छवि को ईडन के बगीचे के विवरण में पहले से ही पाया गया है। अब हम पाते हैं कि मंदिर की छवि को नई सृष्टि, नए यरूशलेम पर प्रकाशितवाक्य 21 में लागू किया गया है।

तो जॉन जो मापता है, जो चार वर्ग हैं, जहाँ से पानी बहता है, अब एक अलग भौतिक मंदिर नहीं है क्योंकि जॉन कहता है कि वहाँ एक भी नहीं है, और इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। इसलिए, जॉन यहजेकेल 40-48 को पूरा होते हुए देखता है, लेकिन अब एक अलग भौतिक मंदिर में नहीं जैसा कि आपने यहजेकेल में पाया है या जैसा कि आप अधिकांश यहूदी साहित्य या सर्वनाश साहित्य और एक पुनर्स्थापित सृष्टि, एक नई सृष्टि, एक नए यरूशलेम की उनकी अपेक्षाओं में पाते हैं। इसके बजाय, अब, पूरा शहर, जो शायद लोगों को संदर्भित करता है, एक मंदिर है जिसके बीच में भगवान निवास करते हैं।

पूरा शहर अब एक मंदिर है जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति पूरी सृष्टि में समाहित है और फैली हुई है, अब यह किसी अलग इमारत तक सीमित नहीं है। वास्तव में, जैसा कि हम एक बार फिर देखेंगे, यह अब उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के लिए परमेश्वर के इरादे का लक्ष्य है, जहाँ परमेश्वर किसी भौतिक इमारत में नहीं रहता था, जहाँ परमेश्वर अदन में रहता था और जहाँ पूरी सृष्टि परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान होनी थी। अब, हम इसे प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पूरा होते हुए पाते हैं।

तो भौतिक मंदिर का मतलब था, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं जब हमने पुराने नियम के पाठ के बारे में बात की थी, तम्बू और मंदिर दोनों पूरे ब्रह्मांड का एक छोटा सा हिस्सा प्रतीत होते हैं, जो उस समय की आशा करते हैं जब परमेश्वर की महिमा और उसकी उपस्थिति पूरी सृष्टि को भर देगी जैसा कि उत्पत्ति 1 और 2 में माना गया था। अब हम पाते हैं कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में वह लक्ष्य प्राप्त हो गया है, यही कारण है कि एक और मंदिर, एक अलग भौतिक मंदिर की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मंदिर का लक्ष्य अब प्राप्त हो चुका है, अब साकार हो चुका है। तो पूरी नई सृष्टि मंदिर है, और यूहन्ना यहजेकेल 40-48 लेता है और इसे एक अलग भौतिक संरचना पर नहीं बल्कि पूरे नए यरूशलेम पर लागू करता है जो यहजेकेल और अन्य पुराने नियम की भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं की पूर्ति करता है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ निवास करता है। तो, सबसे पहले, हमने नए नियम के सूत्र को देखा जो पुराने नियम में एक तम्बू या मंदिर में परमेश्वर के निवास की आशा करता है।

दूसरा, हमने देखा कि यूहन्ना ने यहजेकेल 40-48 को लागू किया, जो एक पुनर्निर्मित मंदिर से संबंधित है। यूहन्ना अब इसे नए यरूशलेम पर लागू करता है। फिर से, लगभग विरोधाभासी रूप से, जहाँ मंदिर यहजेकेल के दर्शन की मुख्य चिंता थी, वहाँ यूहन्ना के दर्शन में कोई मंदिर नहीं है क्योंकि इसका उद्देश्य अब पूरा हो चुका है।

तीसरा प्रदर्शन या सबूत जो यह दर्शाता है कि नया यरूशलेम एक मंदिर है, वह है प्रकाशितवाक्य 21, आयत 19-20 में कीमती पत्थरों की मौजूदगी। इसलिए, आयत 19, प्रकाशितवाक्य 21 में, यूहन्ना ने पहले ही नींव का उल्लेख किया है ताकि यह फिर से प्रदर्शित किया जा सके कि यूहन्ना का शायद प्रतीकात्मक रूप से शहर को लोगों के बराबर करना है, जैसे शहर की नींव को प्रेरितों के बराबर माना जाता है। प्रकाशितवाक्य 21, आयत 14 में शहर पर प्रेरितों के नाम हैं।

अब, यूहन्ना हमें इन नींवों के बारे में और अधिक बताने जा रहा है। पद 19 में, वह कहता है, "शहर की दीवारों की नींव हर तरह के कीमती पत्थरों से सजी हुई थी। पहली नींव यशब, दूसरी नीलम, तीसरी गोमेद, चौथी पन्ना थी, और फिर मैं बाकी आठ पत्थरों के बारे में नहीं बताऊंगा।"

लेकिन प्रकाशितवाक्य 21, श्लोक 19-20 में बारह नींवों में से प्रत्येक को बारह विशिष्ट पत्थरों के बराबर बताया गया है। इसके बारे में महत्वपूर्ण बात यह है, जैसा कि लगभग हर टिप्पणी आपको बताएगी, कि ये पत्थर महायाजक की छाती पर लगे पत्थरों को दर्शाते हैं। निर्गमन अध्याय 28 और यहजेकेल अध्याय 26, जो दिलचस्प रूप से अदन के बगीचे और आदम के पुजारी होने से जुड़े हैं।

इसलिए, पत्थरों का मतलब न केवल महायाजक के वक्ष-पट्ट से जुड़ना है, बल्कि मूल पवित्र स्थान, ईडन गार्डन से भी जुड़ना है। इसलिए, महायाजक के वक्ष-पट्ट पर लगे पत्थर, जो अब नींव के पत्थरों से जुड़े हैं, नए यरूशलेम के पुरोहिती कार्य का सुझाव देते हैं। यह सुझाव देता है कि लोग अब नए यरूशलेम में ईश्वर के पुजारी के रूप में कार्य करते हैं।

शायद फिर से, यह 1 पतरस अध्याय 2 में जो मिलता है उसका प्रतिबिंब है। अब, परमेश्वर के लोग एक पवित्र पुजारी हैं जो परमेश्वर को स्वीकार्य आध्यात्मिक प्रशंसा के बलिदान चढ़ाते हैं। अब, स्पष्ट रूप से, नींव के साथ कीमती पत्थरों का संबंध, निर्गमन 28 में महायाजक की छाती के पत्थर होने के कारण, यह भी स्पष्ट है। एक अन्य यहूदी साहित्य भी, अब पूरे नए यरूशलेम के लोगों के पुजारी कार्य को परमेश्वर के पवित्र मंदिर के रूप में सुझाता है।

मंदिर के साथ एक और महत्वपूर्ण कड़ी शहर की बनावट में पाई जाती है। और वह यह है कि कीमती पत्थरों के अलावा, वह धातु जो नए यरूशलेम में सबसे प्रमुख भूमिका निभाती है, वह है सोना। इसलिए, अध्याय 21 और श्लोक 21 में, शहर की बड़ी सड़क सोने की थी, पारदर्शी कांच की तरह शुद्ध।

और अधिकांश, विशेष रूप से ग्रीको-रोमन शहरों में, आमतौर पर बीच से होकर गुजरने वाली एक मुख्य सड़क होती थी। इसका मतलब शायद यहाँ एक चौड़ी जगह या शहर के केंद्र में एक चौक भी हो सकता है। लेकिन किसी भी मामले में, लेखक सड़क या चौक को सोने से बना हुआ बताता है।

लेकिन इससे भी बढ़कर, अध्याय 21 और श्लोक 18 में लेखक कहता है कि दीवार जैस्पर से बनी थी और शहर शुद्ध सोने से बना था जो कांच की तरह शुद्ध था। तो, आखिरकार, पूरा शहर सोने से बना है। अब, इस बारे में जो महत्वपूर्ण है, जैसा कि हमने पहले ही पुराने नियम में उल्लेख

किया है, पुराने नियम के कुछ साक्ष्यों का सर्वेक्षण करते हुए, वह यह है कि सोने ने तम्बू और मंदिर दोनों के निर्माण में इस्तेमाल की जाने वाली प्रमुख धातु के रूप में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

तो, आपको एक उदाहरण देने के लिए, मैं आपको वापस जाकर निर्गमन में तम्बू का विवरण पढ़ने के लिए छोड़ता हूँ। साथ ही, 1 राजा 5-7 और उसके उन भागों को और विस्तार से पढ़ें जहाँ निर्माण में इस्तेमाल की जाने वाली मुख्य धातु के रूप में सोना हर जगह दिखाई देता है। लेकिन आपको एक उदाहरण देने के लिए, 1 राजा 6 और 19-22 में, उसने मंदिर के भीतर आंतरिक पवित्र स्थान तैयार किया ताकि वहाँ प्रभु की वाचा पर सन्दूक रखा जा सके।

भीतरी पवित्रस्थान 20 हाथ लंबा, 20 हाथ चौड़ा और 20 हाथ ऊंचा था। उसने अंदर के भाग को शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसने देवदार की वेदी को मढ़ा। सुलैमान ने मंदिर के अंदर के भाग को शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसने भीतरी पवित्रस्थान के सामने सोने की जंजीरें लगाईं, जो सोने से मढ़ी हुई थीं।

इसलिए, उसने पूरे आंतरिक भाग को सोने से मढ़ा। उसने आंतरिक पवित्र स्थान से संबंधित वेदी को भी सोने से मढ़ा। और हम और अधिक पढ़ सकते हैं, लेकिन आपको इसका अर्थ समझ में आ गया होगा।

जाहिर है कि सब कुछ सोने से मढ़ा हुआ है। तो अब प्रकाशितवाक्य 21 में नया यरूशलेम सोना है। इसलिए, मैं मानता हूँ कि इसका प्रभाव सिर्फ नए यरूशलेम और उसकी सुंदरता के श्रेष्ठ मूल्य का सुझाव देना नहीं है, हालाँकि यह निश्चित रूप से सच है।

लेकिन मुझे लगता है कि लेखक नहीं चाहता कि आप पुराने नियम के साथ संबंध को भूल जाएँ। और क्या सोने से बना था? खैर, हमने अभी पढ़ा कि 1 राजा में, मंदिर सोने से मढ़ा हुआ था। आंतरिक पवित्रस्थान सोने से मढ़ा हुआ था।

और इसलिए सोना, नए यरूशलेम में सोने की उपस्थिति, गोल्डन स्ट्रीट, 21:18 में सोने से बना शहर, इसकी सुंदरता का वर्णन मात्र नहीं है; यह स्पष्ट रूप से नए यरूशलेम को मंदिर के बराबर बताता है। हालाँकि, सोना स्वर्ग या ईडन गार्डन से भी जुड़ा हुआ है, जिसे हमने एक अभयारण्य कहा था। और फिर, परतों में पीछे की ओर काम करने के लिए, यदि नया यरूशलेम, यदि नए यरूशलेम में सोना उस मंदिर से जुड़ता है जो सोने से ढका और मढ़ा हुआ है, तो मंदिर और तम्बू में सोने का संभवतः ईडन गार्डन से भी कुछ संबंध है, जिसे हमने एक अभयारण्य के रूप में देखा।

मंदिर और निवासस्थान को ईडन के लघु उद्यान के रूप में बनाया गया था। उनका उद्देश्य ईडन के बगीचे में परमेश्वर के निवास को पुनः प्राप्त करना और याद दिलाना था। खैर, हमने उत्पत्ति अध्याय 2 और विशेष रूप से श्लोक 11 और 12 में से एक में देखा कि सोना पहले से ही ईडन के बगीचे से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, अध्याय 2, श्लोक 11 और 12 में, हम नाम पढ़ते हैं, अगर मैं वापस जा सकता हूँ, श्लोक 10, बगीचे को सींचने वाली एक नदी ईडन से बहती थी। इसलिए, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 22 में बहने वाली नदी, सिंहासन से बहती हुई, न केवल यहजेकेल 47 में मंदिर को याद करती है, बल्कि यह वापस जाती है और ईडन मंदिर, ईडन अभयारण्य से बहने वाली नदी को भी याद करती है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता था। और अब, श्लोक 11 में, हम पढ़ते हैं, पहली नदी का नाम पीशोन है।

यह हवीला की पूरी भूमि से होकर गुजरता है, जहाँ सोना पाया जाता है। उस भूमि का सोना अच्छा है। वह आगे कहता है कि उत्पत्ति 2 की आयत 12 में गोमेद भी है। इसलिए सोना और कीमती पत्थर न केवल मंदिर से बल्कि ईडन गार्डन से भी जुड़ते हैं, जो मूल मंदिर अभयारण्य है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता था।

और अब हम इसे नए यरूशलेम में पाते हैं। तो, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का नया यरूशलेम एक मंदिर उद्यान है। एक मंदिर उद्यान एक अभयारण्य है जहाँ परमेश्वर अब उत्पत्ति 1 और 2, तम्बू और मंदिर, और भविष्यवाणी की अपेक्षा, जैसे कि यहजेकेल अध्याय 40 से 48 की पूर्ति में अपने लोगों के साथ रहता है।

यह चौथा बिंदु था। पाँचवाँ बिंदु यह है कि 21 आयत 16 में ध्यान दें कि प्रकाशितवाक्य 21-16 में शहर का वर्णन कैसे किया गया है। शहर की लम्बाई जितनी थी, चौड़ाई भी उतनी ही थी।

उन्होंने शहर को एक छड़ से नापा और पाया कि इसकी लंबाई 12,000 स्टेडिया है। मैं माप की सटीक इकाइयों या इस तरह की किसी भी चीज़ में नहीं जा रहा हूँ। लेकिन फिर उन्होंने कहा कि यह जितना लंबा है उतना ही चौड़ा और ऊँचा भी है।

दूसरे शब्दों में कहें तो नया यरूशलेम घनाकार है। इसका आकार घन जैसा है। इसकी लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई बराबर है।

यानी यह एक घन के आकार का है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि यदि आप 1 राजा पर वापस जाएँ, तो फिर से 1 राजा 5-7 मूल मंदिर के निर्माण का वर्णन है, जो सुलैमान द्वारा बनाया गया पहला मंदिर है। अध्याय 6 और श्लोक 20 में, लेखक कहता है कि आंतरिक पवित्र स्थान 20 हाथ लंबा, 20 चौड़ा और 20 ऊँचा था।

उसने अंदर के भाग को शुद्ध सोने से मढ़ा, और उसने वेदी को भी सोने से मढ़ा। दूसरे शब्दों में, आंतरिक पवित्रस्थान की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई एक समान थी। यानी यह घनाकार था।

और अब ऐसा लगता है जैसे जॉन यह स्पष्ट करना चाहता है कि यह सिर्फ एक मंदिर नहीं है, बल्कि पूरा नया यरुशलम ही सबसे पवित्र स्थान है। यह आंतरिक पवित्र स्थान है। यह उसी आकार का है।

इसका आकार घन जैसा है, ठीक वैसे ही जैसे 1 राजा अध्याय 6 में पवित्रतम स्थान है। तो फिर, शहर का घनाकार आकार सिर्फ सुंदरता और समरूपता के लिए नहीं है, हालाँकि यह ऐसा ही



है। जॉन की भाषा में अक्सर एक से ज़्यादा चीज़ें होती हैं। उनकी भाषा कभी-कभी बहुत ही बहुमूल्य होती है।

यह एक से अधिक विचार उत्पन्न करता है। इसलिए घनाकार आकृति होना समरूपता और सुंदरता को दर्शाता है, लेकिन यह भी, और मुझे लगता है कि मुख्य रूप से, 1 राजा अध्याय 6 से आंतरिक अभयारण्य के आकार को याद करने के लिए है। नए यरूशलेम के मंदिर के कार्य के कुछ अन्य संकेत अध्याय 22 में हैं। अध्याय 22 और श्लोक 3 और 4 में, हम यह पढ़ते हैं, अब कोई अभिशाप नहीं होगा।

परमेश्वर और मेमे का सिंहासन नगर में होगा, और उसके सेवक उसकी सेवा करेंगे। वे उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर होगा। शायद एक बार फिर, मुझे उस पुजारी का वर्णन याद आता है जिसके माथे पर परमेश्वर का नाम होगा और वह परमेश्वर की उपस्थिति में और परम पवित्र स्थान में प्रवेश करके परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा होगा।

अब, परमेश्वर के सभी लोग, सिर्फ़ पुजारी नहीं, बल्कि परमेश्वर के सभी लोग, अब पुजारी के रूप में कार्य करते हैं जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होते हैं, जो अपने माथे पर परमेश्वर का नाम लेकर उसकी सेवा करते हैं, और जो परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होकर उसका चेहरा देखते हैं। तो एक बार फिर, पुराने नियम में तम्बू और मंदिर के संबंध में पुजारी भाषा अब पुजारियों के एक अलग समूह पर लागू नहीं होती है, बल्कि अब परमेश्वर के सभी लोग पुजारी के रूप में कार्य करते हैं जो उसकी उपस्थिति में परमेश्वर की सेवा करते हैं। एक आखिरी, नंबर 7। यह 7वां है, मुझे प्रकाशितवाक्य में 7 के साथ आना था।

लेकिन 7वाँ अध्याय 22 और श्लोक 5 में है। अब रात नहीं होगी, उन्हें दीपक की रोशनी या सूरज की रोशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देगा। दूसरे शब्दों में, ऐसा लगता है कि मंदिर में रोशनी देने वाले दीपक की अब ज़रूरत नहीं है क्योंकि परमेश्वर स्वयं नए यरूशलेम मंदिर को प्रकाशित करता है और रोशनी देता है। तो, ये सभी बातें, अध्याय 21-3 में नई वाचा का सूत्र, जो अपने लोगों के साथ परमेश्वर के नए वाचा के निवास की आशा करता है, यह तथ्य कि यूहन्ना यहेजकेल 40-48 से प्रेरणा लेता है, जो पुनर्निर्मित मंदिर से संबंधित है, लेकिन अब वह इसे नए यरूशलेम के लोगों पर लागू करता है।

21:19 और 20 में महायाजक की छाती पर लगे पत्थर पूरे नए यरूशलेम के लोगों के पुरोहिती कार्य को दर्शाते हैं। यह तथ्य कि नए यरूशलेम में सोना प्रमुख धातु है, इस बात का प्रतिबिंब है कि सोने ने तम्बू और मंदिर के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शहर का घनाकार आकार परम पवित्र स्थान के आकार की याद दिलाता है।

लोग अपने माथे पर परमेश्वर का नाम लिखकर याजकों के रूप में कार्य कर रहे हैं, परमेश्वर की उपस्थिति में उसकी सेवा कर रहे हैं, उसे आमने-सामने देख रहे हैं, पुराने नियम में याजकों के कार्य को याद कर रहे हैं। और अब परमेश्वर नए यरूशलेम को प्रकाश दे रहा है। परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति नए यरूशलेम को भर देती है, ताकि अब उसे प्रकाश देने के लिए दीपक की आवश्यकता न रहे।

ये सभी संकेत देते हैं कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का नया यरूशलेम, जो फिर से मुख्य रूप से लोगों का प्रतीक और संकेत है, पौलुस द्वारा भाषा के उपयोग के अनुरूप है। अब, पूरा नया यरूशलेम एक पवित्र मंदिर उद्यान है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ पुराने नियम के मंदिर और तम्बू की पूर्ति में रहता है, लेकिन एक पुनर्निर्मित मंदिर की भविष्यवाणी की उम्मीद भी करता है, यहजेकेल 40-48, लेकिन सृष्टि के लिए परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति भी, कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ रहेगा। और अब हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक नई पृथ्वी पर रहता है।

लेकिन अब उसका निवास पूरे शहर के लोगों और पूरी सृष्टि के साथ मिलकर बना हुआ है, इसलिए अलग मंदिर की कोई ज़रूरत नहीं है। और जो हमने पहले ही कहा है, उसमें यह भी जोड़ना है कि अलग मंदिर की कोई ज़रूरत नहीं है, इसका एक कारण यह भी है कि तम्बू और मंदिर जो पहले स्थान पर इसकी ज़रूरत रखते थे, उन्हें हटा दिया गया है। यानी, पाप से प्रभावित पहली सृष्टि, उत्पत्ति अध्याय 3, यह मानवीय पाप था, यह मानवीय विद्रोह और अवज्ञा थी जिसके लिए पहले स्थान पर तम्बू और मंदिर की ज़रूरत थी।

जब हमने पुराने नियम को देखा, तो हमने कहा कि तम्बू और मंदिर ने जो कुछ किया, उसमें से एक यह था कि जिस तरह से इसे संरचित किया गया था, उसने परमेश्वर की उपस्थिति को उतना ही सीमित कर दिया जितना कि इसे उपलब्ध कराया। हाँ, मंदिर वह तरीका था जिससे परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता था, लेकिन जिस तरह से इसे स्थापित किया गया था, उसने परमेश्वर की उपस्थिति को प्रतिबंधित कर दिया था ताकि परमेश्वर मुख्य रूप से परम पवित्र स्थान में रहे, और केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार उसमें प्रवेश कर सके। अब हम पाते हैं कि परमेश्वर के सभी लोगों को हर समय परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँच प्राप्त है।

और इसलिए, जिस चीज़ के लिए मंदिर की ज़रूरत थी, पाप और बुराई और पुरानी व्यवस्था, अब हटा दी गई है। जॉन कहते हैं कि पुरानी सृष्टि, पुराना आकाश और पृथ्वी, खत्म हो गई है, और समुद्र अब नहीं रहा। अब कोई शोक, रोना और दर्द नहीं है।

क्यों? क्योंकि जिन चीज़ों की वजह से यह हुआ था, उन्हें अब हटा दिया गया है। जिस चीज़ के लिए एक तम्बू और मंदिर की ज़रूरत थी, पहली सृष्टि, और पाप और बुराई, अब हटा दी गई है ताकि अब अलग मंदिर या तम्बू की ज़रूरत न रहे। परमेश्वर अब सीधे अपने लोगों के साथ रह सकता है, जैसा कि उसने उत्पत्ति 1 और 2 में पहली सृष्टि में किया था। इसलिए तम्बू और मंदिर का लक्ष्य अब आखिरकार प्रकाशितवाक्य 21 और 22 के नए यरूशलेम में साकार हो गया है।

इतना ही नहीं, बल्कि उत्पत्ति 1 और 2 में अपनी सृष्टि के लिए परमेश्वर का इरादा अब छुटकारे के इतिहास की लंबी प्रक्रिया के माध्यम से अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है, अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 के नए यरूशलेम में अपना लक्ष्य और अंतिम पूर्ति पा रहा है। जहाँ परमेश्वर अब एक नई सृष्टि में अपने लोगों के साथ तुरंत और सीधे वास करता है। अब, यह एक दिलचस्प सवाल उठाता है जिससे ज़्यादातर लोग चिंतित हैं और आश्चर्य करते हैं, खासकर वे जो कुछ धार्मिक परंपराओं से संबंधित हैं।

और वह यह है कि, हमने जो कुछ भी कहा है, उसके प्रकाश में, न केवल प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, बल्कि पुराने नियम और अन्य पुराने नियम के ग्रंथों में, और नए नियम के ग्रंथों में, जिन पर हमने कुछ विस्तार से विचार किया है, क्या मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा? उदाहरण के लिए, यहजेकेल 40-48 में हमने जो पढ़ा है, और पुराने नियम में पुनर्निर्माण मंदिर की अपेक्षाएँ, और मंदिर द्वारा निभाई गई भूमिका को देखते हुए, क्या हमें भविष्य में कभी पुनर्निर्माण मंदिर की अपेक्षा करनी चाहिए? क्या हमें उम्मीद करनी चाहिए कि भविष्य में कभी इस्राएल अपने मंदिर का पुनर्निर्माण करेगा और बलिदान प्रणाली को फिर से स्थापित करेगा और मंदिर काम करेगा और भूमिका निभाएगा? मेरा जवाब है कि शायद हमें ऐसा करना चाहिए। शायद मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाएगा। शायद किसी तरह, इस्राएल अपने मंदिर का फिर से निर्माण करेगा।

हालाँकि, जैसा कि आप में से ज्यादातर लोग जानते हैं, अभी मंदिर पर्वत पर मुसलमानों का कब्ज़ा है, और गुंबद और चट्टान इस समय इसे लगभग असंभव बना देते हैं कि मौजूदा हालात में ऐसा हो सकता है। लेकिन यह संभव है कि एक दिन इज़राइल अपने मंदिर का पुनर्निर्माण कर ले और अपने बलिदानों को फिर से शुरू कर दे। लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि यह बाइबिल की भविष्यवाणी के लिए महत्वपूर्ण है।

और फिर, हमने जो पढ़ा है, और जो हमने देखा है, जहाँ तक मंदिर विषय के बाइबिल, धार्मिक विकास का सवाल है, मंदिर संकेत करता है, मंदिर का प्राथमिक कार्य अपने लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति और उस उपस्थिति का विस्तार संपूर्ण सृष्टि और संपूर्ण पृथ्वी को शामिल करने की ओर इशारा करता प्रतीत होता है। फिर, हम नए नियम में देखते हैं कि यह यीशु मसीह और उसके लोगों द्वारा पूरा किया गया था। और फिर अंत में और अंततः नई सृष्टि में।

और मसीह और उसके लोगों में तथा नई सृष्टि में मंदिर के वादों और भविष्यवाणियों की पूर्ति में, एक भौतिक मंदिर कोई भूमिका नहीं निभाता है। क्यों? क्योंकि मंदिर का लक्ष्य पहले ही प्राप्त हो चुका है। मंदिर का उद्देश्य अब परमेश्वर द्वारा मसीह में अपने लोगों के साथ सीधे चर्च में अपनी आत्मा के माध्यम से निवास करने और फिर एक दिन नई यरूशलेम के लोगों में पूरी सृष्टि में वास करने के साथ साकार हो चुका है।

तो, मेरे हिसाब से, यह एक और भौतिक मंदिर को अनावश्यक बना देगा। क्यों? अब जबकि वास्तविकता आ गई है, तो वे प्रतीक, प्रति, छाया की ओर क्यों लौटना चाहेंगे जिसने इसकी आशा की थी? अब जबकि परमेश्वर ने यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी उपस्थिति प्रकट की है, अब जबकि परमेश्वर सीधे अपने लोगों के साथ रहता है, और अब जबकि उसकी उपस्थिति प्रकाशितवाक्य 21 और 22 के अनुसार नए यरूशलेम की संपूर्णता में भौतिक मंदिर के बिना प्रकट होने जा रही है, तो हम भौतिक मंदिर में वापस क्यों जाना चाहेंगे यदि लक्ष्य अब प्राप्त हो चुका है? ऐसा लगता है कि यह एक नए भौतिक पृथक मंदिर को अनावश्यक बना देगा। इसलिए, जबकि एक दिन यरूशलेम में एक और मंदिर का पुनर्निर्माण हो सकता है, मुझे यकीन नहीं है कि इसे भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि मैं यीशु मसीह और उनके चर्च को, परमेश्वर के तम्बू मंदिर की पूर्ति, अपने लोगों के साथ निवास करते हुए देखता हूँ, जो तब नई सृष्टि में एक भौतिक स्थान में पूर्ण होता है।

तो फिर, पूर्ति का एक शाब्दिक भौतिक पहलू है, लेकिन यह भौतिक इमारत में उतना नहीं है जितना कि अब भौतिक सृष्टि में है, जैसा कि उत्पत्ति 1 और 2 में परमेश्वर ने इरादा किया था। ग्रेग बील को फिर से संदर्भित करने के लिए, उन्होंने इसे इस तरह से वर्णित किया। उन्होंने कहा कि एक बार, जब वे विदेश में अपनी पत्नी से अलग हो गए थे, तो उनके पास उनकी एक तस्वीर थी, और वे अक्सर उस तस्वीर को देखते थे। लेकिन एक बार जब वे फिर से मिल गए, तो उन्होंने कहा, जब मेरे पास वास्तविकता है तो हर समय तस्वीर को देखने का क्या मतलब होगा? और उन्होंने इसे मंदिर के बराबर बताया।

हम भौतिक मंदिर में वापस क्यों जाना चाहेंगे, जबकि वह वास्तविकता जिसकी ओर उसने संकेत किया है, अब यहाँ है, अब एक वास्तविकता है, और वह है परमेश्वर का अपने लोगों के साथ निवास करना। इस कारण से, एक बार फिर, शायद इस्राएल अपने मंदिर का पुनर्निर्माण करेगा, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि इसका बाइबल की भविष्यवाणी से कोई लेना-देना है। क्योंकि जैसा कि मैं समझता हूँ, अब जब लक्ष्य प्राप्त हो चुका है, तो परमेश्वर के लोग उसमें वापस क्यों जाना चाहेंगे? अब जब वास्तविकता अपने लक्ष्य और पूर्ति पर पहुँच चुकी है, तो परमेश्वर छाया या प्रतिलिपि में वापस क्यों जाएगा? अब, अगला विषय जिसे मैं आपको बताना चाहता हूँ जो कई मायनों में मंदिर के विषय से संबंधित है, साथ ही कई अन्य विषयों से भी, वाचा या वाचाओं का विषय है।

मैं यह कहकर शुरू करता हूँ कि बाइबल में वाचा या वाचाएँ वह मूलभूत संरचना हैं जो परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंध को स्पष्ट करती हैं। अब फिर से, यह कहने जैसा नहीं है कि यह मुख्य विषय है, हालाँकि कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि, पुराने नियम में वाल्टर ईचोट से शुरू करते हुए, और कुछ अन्य लोगों ने तर्क दिया है कि वाचा बाइबल का मुख्य विषय या केंद्र है। हालाँकि, कम से कम यह मूलभूत संरचना है जो पुराने और नए नियम में परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंध को स्पष्ट करती है।

और फिर, कुछ लोगों ने इसे केंद्र के रूप में देखा है, लेकिन अगर ऐसा नहीं है, तो यह परमेश्वर के अपने लोगों के साथ मुक्तिदायी रिश्ते के केंद्र में है। इसलिए, इस पर समय बिताना और इसे एक महत्वपूर्ण बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय और नए नियम के धर्मशास्त्रीय विषय के रूप में देखना महत्वपूर्ण है जो पूरे बाइबिल में विकसित होता है। इससे पहले कि आप इसे देखें, शायद सबसे पहले पूछने वाली बात यह है कि वाचा क्या है? और एक बार फिर, मैं बहुत समय नहीं बिताना चाहता या बहुत विस्तार में नहीं जाना चाहता, लेकिन जब हम बाइबिल में वाचा या वाचाओं के बारे में बात करते हैं तो वाचा से हमारा क्या मतलब है? जहाँ तक शाब्दिक डेटा की बात है, आमतौर पर वाचा का विचार हिब्रू शब्द बेरिट , या नए नियम में ग्रीक शब्द डायथेके के इर्द-गिर्द घूमता है ; उन दोनों शब्दों को आमतौर पर वाचा के रूप में अनुवादित किया जाता है और उनका उपयोग उस वाचा संबंध को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ स्थापित करता है।

हालाँकि, जैसा कि हमने अन्य संदर्भों में उल्लेख किया है, हम अनिवार्य रूप से खुद को इस शब्द की उपस्थिति तक सीमित नहीं कर सकते हैं। यानी, यहाँ तक कि उन जगहों पर भी जहाँ पुराने

और नए नियम में बेरिट या डायथेके की कमी हो सकती है, हम मान सकते हैं कि वाचा की अवधारणा मौजूद नहीं है। हम ऐसा नहीं मान सकते।

हो सकता है कि वाचा चल रही हो, यहाँ तक कि उस पाठ में भी जहाँ शाब्दिक डेटा मौजूद नहीं है। लेकिन मूल रूप से, वाचा है... पुराने नियम के विद्वानों को विशेष रूप से प्राचीन निकट पूर्व में प्राचीन वाचाओं की जांच करके और बाइबिल के डेटा पर प्रकाश डालने से मदद मिली है। लेकिन वाचा का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है... इसका वर्णन करने का एक तरीका यह है कि यह एक औपचारिक घोषणा या समझौता है जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंधों के लिए कानूनी रूपरेखा निर्धारित करता है।

और यह आमतौर पर शपथ द्वारा पुष्टि या स्थापित किया जाता है। तो, एक वाचा एक औपचारिक घोषणा या समझौता है जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंधों के लिए कानूनी रूपरेखा निर्धारित करता है। और फिर, यह आमतौर पर शपथ द्वारा पुष्टि या स्थापित किया जाता है।

वाचा के मूल में यह तथ्य है कि परमेश्वर को एक राजा के रूप में देखा जाता है जो अपने लोगों को अपने बच्चों के रूप में अपनाकर उनके साथ संबंध स्थापित करता है। इसी कारण से, कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि जहाँ भी आप पुराने और नए नियम में पारिवारिक भाषा देखते हैं, पिता और बच्चे वाचा के रिश्ते की धारणा को रेखांकित करते हैं। लेकिन इसकी शुरुआत परमेश्वर के संप्रभु, राजा के रूप में होती है, जो अपने लोगों को अपने बच्चों के रूप में अपनाकर संबंध स्थापित करता है।

और वह उनका पिता बन जाता है। और इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि आप दाऊद के साथ वाचा के भाग को याद करते हैं, तो दाऊद की वाचा, मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, तुम मेरे पुत्र होगे। यह वाचा की भाषा है जहाँ परमेश्वर संप्रभु राजा है जो पिता बनकर एक रिश्ते में प्रवेश करता है, और वह अपने लोगों को उनके बच्चों के रूप में अपनाता है।

तो, इसका मतलब है कि परमेश्वर अपने लोगों को चुनता है या चुनता है। वाचा परमेश्वर के चुनाव या चयन पर आधारित है। इससे पता चलता है कि, कम से कम बाइबिल की वाचाओं में, परमेश्वर ही वाचा का प्राथमिक आरंभकर्ता है।

लोग यह तय नहीं करते कि उन्हें वाचा चाहिए, इसलिए वे परमेश्वर के पास जाते हैं और कुछ करने की कोशिश करते हैं। लेकिन परमेश्वर ही है जो कृपापूर्वक वाचा का रिश्ता स्थापित करता है और अपने लोगों के साथ वाचा का रिश्ता स्थापित करने की पहल करता है। अब, बाइबिल धर्मशास्त्र में केंद्रीय विषय नामक पुस्तक में वाचाओं पर एक अध्याय पर एक बहुत ही उपयोगी लेख में, स्कॉट हैफमैन ने दूसरों पर भरोसा करते हुए, वाचा के तीन तत्वों को अलग किया है।

खास तौर पर पुराने नियम में। सबसे पहले उन्होंने कहा कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए अनुग्रहपूर्वक प्रावधान करने और वाचा सम्बन्ध स्थापित करने की पहल करता है। इसलिए, एक बार फिर, परमेश्वर वाचा का आरंभकर्ता है।

परमेश्वर ही वह है जो प्रावधान करता है, जो वाचा के रिश्ते में अपने लोगों के लिए कृपापूर्वक प्रावधान करता है। दूसरा तत्व यह है कि वाचा अपने साथ उस वाचा के रिश्ते को बनाए रखने के लिए शर्तें या दायित्व लेकर आती है। इसलिए, वाचा को बनाए रखने और वाचा के रिश्ते को बनाए रखने के लिए वाचा में शामिल पक्षों पर कुछ दायित्व होते हैं।

तीसरा, वाचा के आशीर्वाद और शाप हैं जो वाचा के रिश्ते को बनाए रखने या न रखने पर आते हैं। इसलिए, वाचा के बारे में हम और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन कम से कम, परमेश्वर पहल करता है और वाचा के रिश्ते में लोगों के लिए कृपापूर्वक प्रावधान करता है। दूसरा यह है कि वाचा अपने साथ उस वाचा के रिश्ते को बनाए रखने के लिए दायित्व और शर्तें लेकर आती है।

और फिर, अंत में, इसके संबंध में, वाचा को बनाए रखने या न रखने के आधार पर शाप आशीर्वाद और शाप हैं। वाचा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं और जिसे मैंने कुछ अन्य विषयों के संबंध में देखा है, संभवतः वाचा का मूल तत्व है कि वाचा संबंध को इस सूत्र द्वारा संक्षेपित किया जा सकता है: मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे लोग होंगे। और हमने इसे लैव्यव्यवस्था 26, आयत 11 और 12 में देखा।

हमने यह जकेल 37 में देखा, जो कई अन्य स्थानों पर है। तो मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, वे मेरे लोग होंगे की भाषा ऐसा सूत्र प्रतीत होता है जो वाचा के रिश्ते के मूल में क्या है, इसका सारांश और सार प्रस्तुत करता है। अब, पुराने नियम और नए नियम में वाचा या वाचाओं से संबंधित कुछ मुद्दे।

एक बार फिर, हम कम से कम एक सत्र पुराने नियम के साक्ष्य को देखने में बिताएंगे और बहुत जल्दी पुराने नियम की वाचाओं का सारांश देंगे और देखेंगे कि वे कैसे विकसित होती हैं, और फिर अपना अधिकांश समय नए नियम की वाचाओं के विकास को देखने में बिताएंगे, विशेष रूप से नई वाचा। लेकिन एक मुद्दा यह है कि कितनी वाचाएँ हैं? अधिकांश वाचाओं पर व्यापक सहमति है, जैसे कि उत्पत्ति 9 में नूह के साथ की गई वाचा, उत्पत्ति 12 में अब्राहम के साथ की गई वाचा, और दाऊद के साथ की गई वाचा के बाद, मूसा की वाचा। अधिकांश वाचाओं पर व्यापक सहमति है।

लेकिन हम जिन मुख्य प्रश्नों पर विचार करेंगे, उनमें से एक यह है कि क्या सृष्टि के समय भी कोई वाचा थी। हमने इसे पहले ही संक्षेप में उठाया था, लेकिन फिर इस बात पर कुछ असहमति है कि पुराने नियम में कितनी वाचाएँ हैं। और मैं इसे निश्चित रूप से हल करना नहीं चाहता या उम्मीद नहीं करता, लेकिन कम से कम यह सवाल तो उठाता ही हूँ कि क्या सृष्टि के समय भी कोई वाचा थी? एक और महत्वपूर्ण सवाल इन सभी वाचाओं के बीच का संबंध है। परंपरागत रूप से, दो दृष्टिकोण रहे हैं।

ये एकमात्र दृष्टिकोण नहीं हैं, और उनके भीतर भिन्नताएँ हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों ने वाचाओं के बारे में अपने दृष्टिकोण को भी संशोधित किया है। लेकिन शास्त्रीय रूप से पारंपरिक रूप से, और ऐतिहासिक रूप से, वाचाओं के साथ संबंधों के लिए दो दृष्टिकोण रहे हैं। डिस्पेंसेशनलिज्म

के रूप में जाना जाने वाला आंदोलन पारंपरिक रूप से वाचाओं के बीच अधिक असंततता और कुछ वाचाओं के बीच अधिक वियोग को देखता है, विशेष रूप से इस संदर्भ में कि वे चर्च के संदर्भ में कैसे पूरी होती हैं।

जबकि वाचा धर्मशास्त्र के रूप में जाना जाने वाला आंदोलन अधिक निरंतरता को देखने के लिए प्रवृत्त हुआ है, जो मूल रूप से विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया गया एक ही वाचा संबंध है। इसलिए, हम वाचाओं के बीच संबंधों के बारे में थोड़ी बात करेंगे। क्या हमें और अधिक असंततता देखनी चाहिए? क्या हमें उनके बीच और अधिक निरंतरता देखनी चाहिए? या शायद हमें वाचाओं के बीच असंततता और निरंतरता दोनों के तत्व देखने चाहिए? हमारे उद्देश्यों के लिए, जिन वाचाओं पर हम ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, फिर से, हम मुख्य रूप से अगले भाग में पुराने नियम, पुराने नियम में पाई जाने वाली वाचाओं के बारे में बात करेंगे, और फिर देखेंगे कि वे नए नियम में कैसे विकसित और पूरी होती हैं।

प्राथमिक वाचाएँ जिन पर अधिकांश लोग सहमत हैं, वे हैं नूह की वाचा, मूसा के साथ की गई वाचा, क्षमा करें, उत्पत्ति 9 में नूह; अब्राहम की वाचा, उत्पत्ति 12, 15, 17, 22 में अब्राहम के साथ की गई वाचा; हमें इसके संदर्भ मिलते हैं। 2 शमूएल 7 में दाऊद की वाचा, और हम पाते हैं कि 1 इतिहास में, कुछ भजनों में, हमें दाऊद की वाचा के संदर्भ मिलते हैं। मूसा की वाचा मूसा के साथ की गई वाचा है।

लेवी की वाचा, लेवी और पुरोहिती के साथ की गई वाचा का संदर्भ है, जिस पर मैं शायद कोई समय नहीं बिताऊंगा और उससे निपटूंगा। और फिर अंत में, नई वाचा, यिर्मयाह अध्याय 31 नई वाचा का सबसे स्पष्ट संदर्भ है। फिर से, सवाल है: सृष्टि के बारे में क्या? क्या कोई वाचा है? या सृष्टि के समय कोई वाचा थी? उत्पत्ति 1 और 2 में। अब, वाचा शब्द का उपयोग वहां नहीं किया गया है, और इसलिए इस कारण से, कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि कोई वाचा सृष्टि नहीं थी, जबकि अन्य, सबसे हाल ही में, पीटर जेंट्री और स्टीफन वेलम द्वारा कुछ साल पहले प्रकाशित एक पुस्तक किंगडम थ्रू कोवेनेंट, बहुत विस्तार से तर्क देती है कि उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि के समय एक वाचा थी। वाचाओं के बीच क्या संबंध है? मैं वाचाओं और पुराने नियम के बीच विशिष्ट संबंध का वर्णन करने में बहुत समय नहीं लगाना चाहता, लेकिन मैं संक्षेप में बताता हूँ।

एक बार फिर, स्कॉट हैफ़मैन ने अपने लेख या सेंट्रल थीम्स में वाचाओं पर अपने अध्याय में, सेंट्रल थीम्स इन बाइबिल थियोलॉजी नामक पुस्तक में कहा है कि पवित्रशास्त्र पूरे छुटकारे के इतिहास में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक निरंतर संबंध की गवाही देता है जिसे इसके क्रमिक वाचाओं में औपचारिक रूप दिया गया है और मूर्त रूप दिया गया है। इसलिए, मुझे लगता है कि इसे देखने का यह एक मददगार तरीका है। हालाँकि कई अलग-अलग वाचाएँ हैं, नूहिक, अब्राहमिक, डेविडिक, मोज़ेक, आदि, ये सभी वाचाएँ संभवतः क्रमिक रूप से एक व्यापक, व्यापक संबंध या वाचा संबंधी संबंध को व्यक्त करने के लिए हैं जिसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ स्थापित करता है।

इसलिए, फिर से, पवित्रशास्त्र पूरे छुटकारे के इतिहास में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक निरंतर संबंध की गवाही देता है जिसे औपचारिक रूप दिया गया है और इसके क्रमिक वाचाओं

में सन्निहित किया गया है। इसलिए, अगले भाग में हम जो करना चाहते हैं वह पुराने नियम में उन क्रमिक वाचाओं की जांच करना है। हम उत्पत्ति 1 और 2 पर बहुत संक्षेप में विचार करके शुरू करेंगे और क्या हमें वहाँ वाचा के संदर्भ में बात करनी चाहिए और फिर विभिन्न वाचाओं को संक्षेप में देखने के लिए विहित क्रम और ऐतिहासिक क्रम में आगे बढ़ेंगे।

वे क्या थे? उनका कार्य क्या था? और फिर से इस बात की तैयारी में कि वे यीशु मसीह और नए नियम में कैसे पूरे होते हैं।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा नए नियम के धर्मशास्त्र पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह रहस्योद्घाटन 21-22 में मंदिर पर सत्र 8 है।